साधु

जब देश में हिन्दू-धर्म शास्त्र का प्रचार था, लोग अन्तःकरण की शुद्धि और भगवान की प्राप्ति के लिए सात्विक त्याग करके और कर्तव्य प्रायण होकर साधन किया करते तब साधु शब्द सार्थक था । ऐसे त्यागी तपस्वी और कर्तव्य शील महात्मा-जन अपने को भगवान और जनता का सेवक समझ कर काम करते थे और यह सारे देश में फैले हुये थे । इनका काम धर्म्म की केवल मौखिक व्याख्या करना न था वरन् स्वयं धर्म को धारण कर, धर्माचरण में प्रवृत्त होना था । यह मोक्ष धर्म का साधन करते थे । इनका मोक्ष धर्म अपने को ब्रह्म मान कर गृहस्थियों की गाढ़े पसीने की कमाई को इन्द्रिय भोग और शरीर पालन में खर्च कर अहंकारी बनने मात्र पर निर्भर न था बल्कि इनका धर्म-शास्त्र विहित धर्म था । यह सब को अपनी आत्मा जान कर अपनी आसक्ति और अहंकार की निवृत्ति के लिये सब जीवों को सुख पहुंचाने के लिये कर्म करते थे जैसे कुआ बनवाना, तालाब बनवाना, वृक्ष लगवाना और लोगों को निवृत्ति की शिक्षा देना । परन्तु अब वह बात कहां, अब तो उलटी गङ्गा बह रही है कारण एक मात्र यही है कि संस्कारी जीव उत्पन्न नहीं होते । आज एक परोपकारी साधुजन की कहानी याद आगई है वही पाठक गण की भेंट किये देते हैं ।

दिल्ली प्रान्त के एक ग्राम में कुछ सत्संग था वहां साधु महात्मा आकर निवास किया करते थे । उस ग्राम में एक जाट का लड़का साधुओं का सत्संग किया करता था सत्संग में वह महात्माओं के मुख से कुएं बनाने और तालाब खोदने का उपदेश सुना करता था । जब उपदेश का अंकुर निकला तो उसने निश्चय किया कि किसी प्रकार एक कुआं बनाना चाहिये परन्तु वह अत्यन्त दरिद्री था, उस के पास सिवाय शरीर के कुछ न था । परन्तु निश्चय दृढ था इस लिए उसने अकेलेही कुआ खोदने का विचार कर लिया और थोड़े ही दिन में बिना किसी सहायता के एक कुंई तय्यार कर ली । कहते हैं कि वह कुंए में रस्सी बांध कर नीचे उतर जाता और वहां टोकरे में मिट्टी भर कर फिर रस्सी के सहारे ऊपर आता और मिट्टी खैंच कर बाहर डालता । वह प्रत्येक बार ऐसा ही करता । पाठकगण कितना कठिन और घोर पुरुषार्थ था । जब कुई तय्यार हुइ तो उसने उसको पक्की बनाने का निश्चय किया परन्तु यह रुपया का मामला था । उस साधारण जाट ले लड़के को दान भी कौन देता ? वह संस्कारी जीव था और इस पुण्य से उसका अन्तःकरण भी कुछ स्वच्छ हो चुका था इस लिये उस में त्याग का भाव आगया और वह कुटुम्ब का मोह छोड़ कर त्यागी हो गया परन्तु उसका त्याग परोपकार के निमित्त था । वह घर को छोड़ कर अपनी कुई को पक्की बनाने की लग्न में ग्राम 2 और शहर 2 में घूमने लगा परन्तु उस को चन्दा मांगना नहीं आता था इस से धन एकत्र न कर सका । अन्त को घूमते 2 वह अहमदाबाद (गुजरात) पहुंच गया । वहां जाकर एक मन्दिर में रहा । दो चार दिन रहने पर उस के उत्तम स्वभाव के कारण लोगों का उस से प्रेम हो गया और उन्होंने प्रेरणा की कि तुम इस मन्दिर के पुजारी बन जाओ । वह भगवान का भक्त तो था

ही साथ ही, उसको कुई के बनाने की बातभी यहां दृष्टि गोचर हुई क्योंकि मन्दिर में चढ़ावा आता था, इस से उसने बड़ी प्रसन्नता से मन्दिरकी सेवा स्वीकार कर ली ! वह नित्य प्रति भिक्षा मांग कर गुजारा करता था और मन्दिर का जो चढ़ावा आता था वह सब जमा करता जाता था । इस प्रकार करते 2 उसको 12 वर्ष हो गये । कहते हैं जब उस के पास कुई बनाने के लिये काफी रुपया हो गया तो वह उस रुपये को लेकर वहां से चल दिया । अपने ग्राम को जाने के लिए वह गुड़गावां स्टेशन पर उतरा । वहां पुलिस के सिपाही ने किसी भान्ति उस पर सन्देह कर लिया । जब उसकी तलाशी ली गई तो उसके पास रुपए निकले । कहते हैं कि उसने उन रुपयों को पृथक 2 कपड़ों में उसी भान्ति बान्ध रक्खा था कि जिस भान्ति उसको पृथक 2 समय में मिले थे । पुलिस ने उसके बयान लेकर हवालात में बन्द कर दिया । फिर अहमदाबाद से जांच करने पर उसका सब वृत्तान्त ठीक पाने पर उसे मुक्त कर दिया । वह साधु अपने ग्राममें आया और वहां आकर उसने अपनी कुई बनाई ॥